

See discussions, stats, and author profiles for this publication at: <https://www.researchgate.net/publication/339181728>

Assessment For Learning (Hindi)

Chapter · February 2020

CITATIONS

0

READS

570

1 author:



[Dr. Akhilesh Kumar](#)

Vardhaman Mahaveer Open University

42 PUBLICATIONS 5 CITATIONS

SEE PROFILE

4.8 संदर्भ ग्रंथ सूची एवं सहयोगी पुस्तकें

1. गिलमैन, लिन (2012). द थ्योरी ऑफ मल्टिपल इंटेलिजेंस. इंडियाना युनिवर्सिटी.
2. स्लाविन, रॉबर्ट (2009). एजुकेशनल साइकोलॉजी.
3. सिंह, अरुन कुमार . उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान. मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी.

4.9 निबंधात्मक प्रश्न

1. अंतःवैयक्तिक बुद्धि से संबंधित अधिगम परिणाम के संकेतक का उल्लेख करते हुए मूल्यांकन के लिए प्रयुक्त किए जानेवाले विभिन्न तकनीकों का वर्णन कीजिए।
2. अंतर्वैयक्तिक बुद्धि से संबंधित अधिगम परिणाम के संकेतक का उल्लेख करते हुए मूल्यांकन के लिए प्रयुक्त किए जानेवाले विभिन्न तकनीकों का वर्णन कीजिए।
3. प्रकृतिवादी बुद्धि से संबंधित अधिगम परिणाम के संकेतक का उल्लेख करते हुए मूल्यांकन के लिए प्रयुक्त किए जानेवाले विभिन्न तकनीकों का वर्णन कीजिए।
4. अंतःवैयक्तिक बुद्धि का प्रदर्शन करते हुए एक पाठ्यसहगामी क्रिया का आयोजन कीजिए।
5. अंतर्वैयक्तिक बुद्धि का प्रदर्शन का करते हुए एक पाठ्यसहगामी क्रिया का आयोजन कीजिए।
6. प्रकृतिवादी बुद्धि का प्रदर्शन का आयोजन करते हुए एक पाठ्यसहगामी क्रिया का आयोजन कीजिए।
7. एक ऐसे परियोजना कार्य का विकास कीजिए जिसकी सहायता से विद्यार्थी के अंतःवैयक्तिक, अंतर्वैयक्तिक तथा प्रकृतिवादी बुद्धि का मूल्यांकन हो सके।

इकाई 5- आकलन के विभिन्न उपकरण (कार्यों के विभिन्न प्रकार: असाइनमेंट, प्रोजेक्ट, परीक्षण एवं उसके विभिन्न प्रकार, स्व मूल्यांकन, सहपाठी मूल्यांकन, पोर्टफोलियो)

- 5.1 प्रस्तावना
- 5.2 उद्देश्य
- 5.3 असाइनमेंट एक सतत मूल्यांकन उपकरण
 - 5.3.1 असाइनमेंट की विशेषताएं
 - 5.3.2 असाइनमेंट के विभिन्न प्रकार
 - 5.3.3 असाइनमेंट निर्माण के विभिन्न चरण
- 5.4 परियोजना
 - 5.4.1 परियोजना के चरण
 - 5.4.2 परियोजना / प्रोजेक्ट के गुण
- 5.5 उपलब्धि परीक्षण एवं उसकी विशेषताएं एवं विभिन्न प्रकार
- 5.6 स्व-आकलन
- 5.7 सहपाठी आकलन एक सतत मूल्यांकन उपकरण
 - 5.7.1 सहपाठी आकलन की विशेषताएं
- 5.8 पोर्टफोलियो
 - 5.8.1 पोर्टफोलियो एवं उसके प्रकार
 - 5.8.2 पोर्टफोलियो के कार्य
 - 5.8.3 पोर्टफोलियो के लाभ
- 5.9 सारांश
- 5.10 अभ्यास प्रश्न
- 5.11 सन्दर्भ ग्रंथ सूची एवं अन्य अध्ययन

5.1 प्रस्तावना

जैसा की आप जानते हैं सूचना विस्फोट के वर्तमान समय में विद्यार्थी न तो ज्ञान का एक निष्क्रिय ग्रहणकर्ता रह गया है और न ही शिक्षक ज्ञान प्राप्ति एक मात्र साधन। वर्तमान समय में शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया में शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनों की वर्षों से चली आ रही भूमिका समयानुकूल परिवर्तन चाह रही है। शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया में आ रहे परिवर्तनों से विद्यार्थियों के शैक्षिक संप्राप्ति के आकलन की प्रक्रिया भी अछूती नहीं है। भारत में राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा (N.C.F.) 2005 ने विद्यार्थी के आकलन एवं वर्तमान परीक्षा व्यवस्था में व्यापक बदलाव की आवश्यकता पर बल दिया है। शिक्षण-अधिगम एवं तदनुसार आकलन का उद्देश्य भी एक सृजनात्मक विद्यार्थी जो अपने समाज एवं सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति संवेदनशील हो, तैयार करना हो गया है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा 2005 ने जो अपेक्षित परिवर्तन सुझाये हैं: उनमें ज्ञान को स्कूल के बाहर के जीवन, विद्यार्थी के समाज एवं संस्कृति से जोड़ना, तोतारटंत ज्ञान प्रदान करने एवं पाठ्यचर्चा के पाठ्यपुस्तक पर केन्द्रित रहने की बजाए विद्यार्थियों के समग्र विकास की ओर उन्मुख बनाना, परीक्षाओं को व्यापक एवं अधिक लचीला बनाना आदि प्रमुख हैं। आकलन की प्रक्रिया को विद्यार्थी के सम्पूर्ण आकलन योग्य बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के पारंपरिक एवं नवीन आकलन उपकरणों की आवश्यकता होगी। इस इकाई में आप विभिन्न प्रकार के आकलन उपकरणों के बारे में जानेंगे जो विद्यार्थी के समग्र आकलन के लिए उपयुक्त हो सकते हैं।

5.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप-

1. आकलन के विभिन्न उपकरणों का वर्णन कर सकेंगे
2. परीक्षण एवं एवं इसके विभिन्न प्रकारों की चर्चा कर सकेंगे
3. शैक्षिक आकलन में प्रयुक्त विभिन्न अन्य कार्यों यथा प्रोजेक्ट, असाइनमेंट आदि की व्याख्या कर सकेंगे
4. पोर्टफोलियो एवं उसके प्रकारों को बता सकेंगे
5. स्व मूल्यांकन एवं इसके महत्व का वर्णन कर सकेंगे
6. सहपाठी मूल्यांकन एवं उसके महत्व की चर्चा कर सकेंगे

5.3 असाइनमेंट एक सतत मूल्यांकन उपकरण

शिक्षा एवं मूल्यांकन में असाइनमेंट का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। असाइनमेंट का सामान्य अर्थ उस गृहकार्य से है जिसे विद्यार्थी को सतत अध्ययन के दौरान पूरा करना होता है। वस्तुतः असाइनमेंट सतत एवं व्यापक मूल्यांकन अथवा संरचनात्मक मूल्यांकन का एक अभिन्न अंग है। असाइनमेंट के मूल्यांकन से शिक्षक को विद्यार्थी के विभिन्न मजबूत एवं कमजोर पक्षों की जानकारी हो जाती है और तदनुसार

शिक्षक विद्यार्थी को उसके अधिगम में सुधार के लिए प्रतिपुष्टि असाइनमेंट पर उपयुक्त कमेंट के द्वारा प्रदान करता है जो विद्यार्थी को उसके अधिगम एवं प्रस्तुतीकरण कौशलों में सुधार करने में मदद करता है। टेक्सास विश्वविद्यालय के अनुसार 'असाइनमेंट का तात्पर्य उन कार्यों से है जिनमें विद्यार्थी की संलग्नता आवश्यक है एवं जिसके परिणाम शिक्षक को मूल्यांकन में यह जानने में सहायता करता है कि विद्यार्थी क्या जानता है या क्या नहीं जानता है'।

(Assignments are tasks requiring student engagement and a final tangible product that enables you to assess what your students know and don't know. They represent the most common ways to assess learning).

5.3.1 असाइनमेंट की विशेषताएं (Characteristics of Assignment)

असाइनमेंट के विभिन्न कार्य निम्नांकित हैं:

- **विद्यार्थी को उससे अपेक्षित व्यवहार की समझ** असाइनमेंट के द्वारा विद्यार्थी के सामने यह स्पष्ट हो जाता है कि उनसे किस प्रकार के अधिगम अनुभव अपेक्षित हैं।
- **कार्य को कैसे किया जाय इसकी समझ** असाइनमेंट के द्वारा विद्यार्थियों को यह समझाने का प्रयास भी किया जाता है कि दिए गए कार्य को कैसे किया जाना है ताकि विद्यार्थी उसके अनुसार अपना सर्वोत्तम प्रदर्शन कर सकें।
- **असाइनमेंट विद्यार्थी को विषय को सम्पूर्णता में समझने में सहायता प्रदान करता है:** असाइनमेंट विषय विशेष के मूल्यांकन से सम्बन्धित विभिन्न पक्षों एवं मूल्यांकन हेटी प्रयुक्त विभिन्न प्रक्रियाओं को दिए गए अधिभागों की जानकारी भी हो जाती है।
- **असाइनमेंट विद्यार्थियों की व्यक्ति भिन्नता के अनुसार उनके आकलन में सहायक है:** असाइनमेंट एक विद्यार्थी के अधिगम, उसके लेखन एवं उसकी शैली की जानकारी शिक्षक को प्रदान करने में सहायक है ताकि शिक्षक उनकी व्यक्तिगत शैक्षिक आवश्यकताओं को यथा संभव पूरा करने का प्रयास कर सके।
- **लचीलापन:** असाइनमेंट मूल्यांकन की प्रक्रिया को लचीला बना देता है क्योंकि असाइनमेंट पूरा करने के लिए विद्यार्थी आपनी गति, आपने समय, एवं अपने तरीके से पूरा करने के लिए स्वतंत्र होता है।
- **असाइनमेंट विद्यार्थी में प्रभावी अध्ययन आदतों एवं ज्ञान के उपयोग की आदत को बढ़ावा देता है** साथ ही सामूहिक असाइनमेंट विद्यार्थी में समूह भावना का भी विकास करता है।
- **योगात्मक आकलन का पूरक (Complementary to Summative Assessment):** वस्तुतः असाइनमेंट सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के क्रम में योगात्मक आकलन का पूरक है जो

विद्यार्थी के सम्पूर्ण आकलन में सहायता करता है जैसा कि रूथ माइकेल ने लिखा है विद्यार्थी दिए गए असाइनमेंट से बेहतर कुछ भी नहीं कर सकता है।

असाइनमेंट की सीमायें:

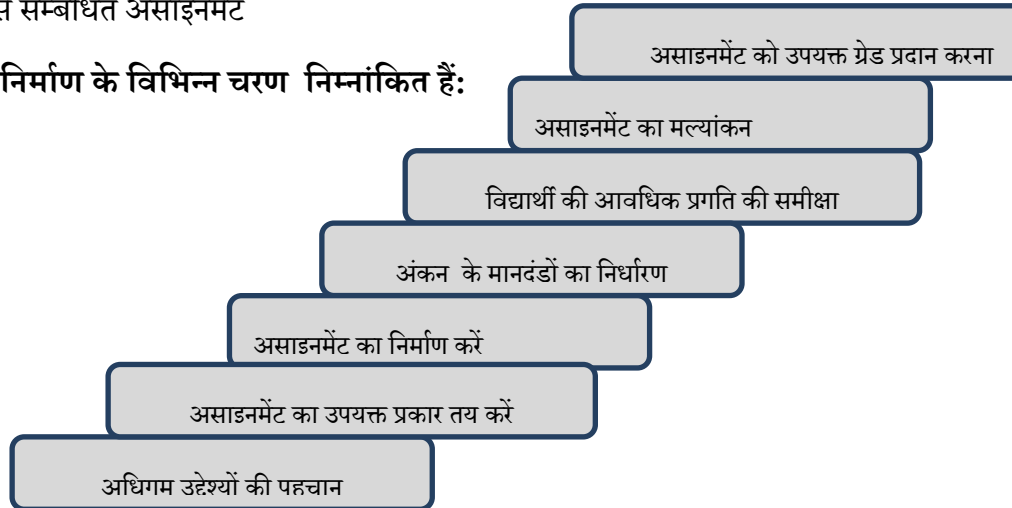
- अतिरिक्त संसाधन की आवश्यकता।
- कक्षा समय बढ़ाने की आवश्यकता।
- असाइनमेंट शिक्षण के आरंभिक स्तर पर ज्यादा उपयोगी नहीं है।

5.3.2 असाइनमेंट के विभिन्न प्रकार (Types of Assignment)

असाइनमेंट के विभिन्न प्रकारों में सामान्य वस्तुनिष्ठ प्रश्नों से लेकर प्रायोगिक कार्य तक वे सभी क्रियाएं शामिल हैं जिनके द्वारा विद्यार्थी का मूल्यांकन किया जा सकता है। सुविधा की दृष्टि से असाइनमेंट को निम्नांकित श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है:

- सामान्य प्रश्न वाले असाइनमेंट
- आलेख
- अनुसन्धान पत्र / शोध पत्र
- मौखिक प्रस्तुतीकरण
- विभिन्न प्रकार की परियोजनाएं
- केस अध्ययन
- प्रयोगशाला से सम्बंधित असाइनमेंट

5.3.3 असाइनमेंट निर्माण के विभिन्न चरण निम्नांकित हैं:

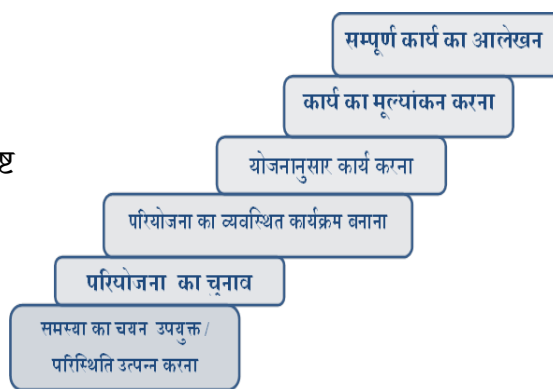


5.4 परियोजना (Project) एक सतत मूल्यांकन उपकरण

शिक्षण एवं अधिगम के क्षेत्र में परियोजना विधि के जनक के रूप में किलपेट्रिक (W.H. Kilpatrik) को जाना जाता है। परियोजना विधि शिक्षण की एक सशक्त विधि के रूप में उभरी है जिसका आधार संरचनात्मक विचारधारा है। यदि प्रभावी ढंग से प्रयोग किया जाये तो परियोजना विधि विद्यार्थी के समग्र आकलन का एक उपयुक्त उपकरण है जो विद्यार्थी की रचनात्मकता, मौलिकता एवं प्रस्तुतीकरण के आकलन में सहायक है। किलपैट्रिक (Kilpatrick, 1921) के अनुसार “प्रोजेक्ट वह उद्देश्यपूर्ण कार्य है जिसे लगन के साथ सामाजिक वातावरण में किया जाता है”। इसमें छात्र अपनी रुचि व इच्छा के अनुसार कार्य करता है।

5.4.1 परियोजना के चरण

1. समस्या का चयन उपयुक्त परिस्थिति उत्पन्न करना /
2. परियोजना का चुनाव और उसके उद्देश्य के बारे में स्पष्ट ज्ञान
3. परियोजना का व्यवस्थित कार्यक्रम बनाना
4. योजनानुसार कार्य करना
5. कार्य का मूल्यांकन करना
6. सम्पूर्ण कार्य का आलेखन प्रक्रिया में परामर्श देना चाहिए।



परियोजना विधि के चरण

5.4.2 परियोजना / प्रोजेक्ट के गुण (Merits of Project)

- परियोजना विधि मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित है
- यह एक विद्यार्थी केन्द्रित विधि है जिसमें विद्यार्थियों की स्वाभाविक रुचियों, मनोवृत्तियों और चेष्टाओं का पूरा पूरा ध्यान रखा जाता है।
- परियोजना विधि विद्यार्थियों को कार्य करने की स्वतंत्रता देकर उनकी जिज्ञासा, रचनात्मकता एवं खोज प्रवृत्ति को बढ़ावा देता है।
- परियोजना विधि से विद्यार्थी अपने वास्तविक जीवन की समस्याओं को सुलझाने का प्रशिक्षण लेते हैं तथा प्राप्त ज्ञान को जीवन में उपयोग करना सीखते हैं।
- परियोजना विधि में समूह में काम करते हुए विद्यार्थी गणित तो सीखते ही हैं साथ ही यह उनमें जनतांत्रिक भावनाओं एवं उत्तरदायित्व की भावना, सहिष्णुता, धैर्य, कर्तव्यनिष्ठता, पारस्परिक प्रेम एवं सहयोग की भावना आदि सामाजिक गुणों का विकास भी होता है।

- इस विधि में विद्यार्थी की सक्रिय भागीदारी एवं प्रत्यक्ष अनुभवों एवं क्रियाओं द्वारा ज्ञान प्राप्त करते के कारण स्पष्ट एवं स्थायी ज्ञान प्राप्त होता है।
- परियोजना विधि विद्यार्थियों की अन्वेषण प्रवृत्ति का विकास करता है।

परियोजना विधि के दोष एवं सीमाएं (Limitations of Project)

- परियोजना विधि से प्रायः क्रमबद्ध ज्ञान देना सम्भव नहीं हो पाता।
- परियोजना विधि से शिक्षण हेतु समय, धन एवं श्रम बहुत अधिक लगता है।
- निश्चित पाठ्यक्रम इस नीति से पूरा करना कठिन है।
- शिक्षक को अधिक परिश्रम करना पड़ता है।

5.5 उपलब्धि परीक्षण एवं उसकी विशेषताएं एवं विभिन्न प्रकार

परीक्षण का सामान्य अर्थ उन परिस्थितियों के उत्पन्न किये जाने से है जिनमें व्यक्ति / विद्यार्थी ने क्या सीखा यह जाना जा सके। औपचारिक रूप से परीक्षण विभिन्न आइटम का वह समूह है जो व्यक्ति/विद्यार्थी द्वारा उसपर की गयी अनुक्रिया के द्वारा उसके आकलन में सहायक है। विभिन्न मानदंडों के आधार पर परीक्षणों विभिन्न प्रकार हो सकते हैं जैसे बुद्धि परीक्षण, अभिवृत्ति परीक्षण आदि जो परीक्षण के उद्देश्यों पर आधारित है, मानक एवं शिक्षक निर्मित परीक्षण जो मानकीकरण के मानदंडों पर आधारित है, वसुनिष्ठ एवं आत्मनिष्ठ परीक्षण जो कि प्रश्नों की प्रृति पर आधारित है आदि। यहाँ पर आप मानकीकृत और अमानकीकृत परीक्षण एवं वस्तुनिष्ठ एवं निबंधात्मक परीक्षण के बारे में मुख्य रूप से जानेंगे जो प्रायः विद्यार्थी के संप्राप्ति के परीक्षण में प्रयोग किये जाते हैं।

उपलब्धि परीक्षणों के उद्देश्य (Aims of Achievement Test)

उपलब्धि परीक्षणों के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- इन परीक्षणों के आधार पर शिक्षण विधियों की उपयोगिता एवं कमियों का ज्ञान प्राप्त हो सकता है।
- शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हुई है यह उपलब्धि परीक्षणों के द्वारा जाना जा सकता है।
- इन परीक्षणों द्वारा शैक्षिक, व्यावसायिक एवं व्यक्तिगत निर्देशन में सहायता ली जाती है।
- किसी कक्षा के विभिन्न विद्यार्थियों ने वर्ष भर में विभिन्न विषयों में कितनी योग्यता प्राप्त की है इसका ज्ञान उपलब्धि परीक्षण से होता है।

- शिक्षकों का अध्यापन किस सीमा तक सफल हो रहा है इसको उपलब्धि परीक्षण द्वारा ही जाना जा सकता है।
- इन परीक्षणों के परिणामों को जानकर छात्रों को अध्ययन से सम्बंधित परामर्श प्रदान किया जा सकता है।
- इन परीक्षणों द्वारा छात्रों के विषय विशेष पर संप्राप्ति का स्तर का अनुमान लगाया जा सकता है।
- इन परीक्षणों द्वारा प्राप्त सूचनाओं के आधार पर पाठ्यक्रम में आवश्यक परिवर्तन किया जा सकता है।

परीक्षणों के प्रकार (Types of Tests)

प्रशासन के आधार पर वर्गीकरण

व्यक्तिगत परीक्षण (Individual Test) - व्यक्तिगत परीक्षणों से तात्पर्य उन परीक्षणों से है जिनका प्रशासन एक समय में एक ही छात्र पर किया जा सकता है। मौखिक परीक्षण प्रायः व्यक्तिगत रूप से ही प्रशासित किए जाते हैं। कुछ बुद्धि परीक्षणों का प्रशासन भी व्यक्तिगत रूप से किया जाता है। इन परीक्षणों का सबसे बड़ा गुण यह होता है कि मापनकर्ता का सम्पूर्ण ध्यान विद्यार्थी विशेष पर ही रहता है परन्तु इनमें समय, शक्ति और धन अधिक लगता है। अतः इनका प्रयोग कुछ अपरिहार्य परिस्थितियों में ही किया जाता है।

समूहिक परीक्षण (Group Test) - इस वर्ग में वे परीक्षण आते हैं जिनका प्रशासन एक समय और एक साथ छात्रों के बड़े से बड़े समूह पर किया जाता है। लिखित परीक्षण प्रायः सामूहिक रूप से ही प्रशासित किए जाते हैं। इन परीक्षणों का बड़ा गुण यह है कि इनके द्वारा एक समय में एक साथ छात्रों के बड़े से बड़े समूह की योग्यता का मापन किया जा सकता है जिससे समय शक्ति और धन की बचत होती है। परन्तु इनके द्वारा विद्यार्थी विशेष की विषय को समझने में कठिनाई नहीं समझी जा सकती, उसके लिए व्यक्तिगत परीक्षणों का प्रयोग करना होता है।

मानकीकरण के आधार पर वर्गीकरण

शिक्षक निर्मित परीक्षण (Teacher Made Tests) - इस वर्ग में वे परीक्षण आते हैं जिनका निर्माण सामान्यतः शिक्षक करते हैं इसलिए इन्हें शिक्षक निर्मित परीक्षण भी कहते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थी की संप्राप्ति के मापन के लिए सर्वाधिक प्रयोग शिक्षक निर्मित परीक्षणों का किया जाता है। विद्यार्थियों की सत्रांत परीक्षा से लेकर अन्य परीक्षाओं यथा मासिक, त्रैमासिक, अर्द्ध वार्षिक और वार्षिक परीक्षाओं, सभी में प्रायः शिक्षक निर्मित परीक्षण ही प्रयोग किये जाते हैं।

मानकीकृत परीक्षण (Standardized Tests) - इस वर्ग में वे परीक्षण आते हैं जिन का निर्माण प्रश्न निर्माण विशेषज्ञ मानकीकरण की सम्पूर्ण प्रक्रिया का पालन करते हुए करते हैं। जैसे कि आप अन्यत्र पढ़

चुके हैं आइटम विश्लेषण की पूरी प्रक्रिया का प्रयोग इसमें किया जाता है और इस प्रकार उन्हें वैध, विश्वसनीय और वस्तुनिष्ठ बनाया जाता है। मनोवैज्ञानिक गुणों के मापन के लिए विभिन्न प्रकार के मानकीकृत परीक्षण उपलब्ध हैं परन्तु जहाँ तक संप्राप्ति परीक्षणों का सवाल है उसके लिए शिक्षक निर्मित निकष संदर्भित परीक्षण ही प्रायः प्रयोग किये जाते हैं।

पूछे गए प्रश्नों की प्रकृति के आधार पर परीक्षणों का वर्गीकरण

1. **निबंधात्मक परीक्षण (Subjective Tests)**- वे परीक्षण जिनमें निबंधात्मक प्रश्न पूछे जाते हैं अर्थात् जिनमें पूछे गए प्रश्नों के उत्तर कई शब्दों में अनेक प्रकार से दिए जा सकते हैं अर्थात् जिनका उत्तर विस्तृत एवं निबंधात्मक रूप में देना होता है, उन्हें निबंधात्मक परीक्षण कहते हैं। इस प्रकार के परीक्षण परंपरागत रूप से काफी समय से विद्यार्थी के संप्राप्ति के मापन के लिए किये जाते रहे हैं। ये प्रश्न मुख्यतः व्यक्तिनिष्ठ परीक्षण होते हैं क्योंकि इनका उत्तर अलग अलग विद्यार्थी अलग प्रकार से लिख सकते हैं साथ ही विभिन्न मूल्यांकन कर्ता उनपर अपनी समझ के अनुसार अलग अलग अंक प्रदान करते हैं। साथ ही इस प्रकार के परीक्षणों के उत्तर विद्यार्थी की भाषाई दक्षता एवं विषय ज्ञान दोनों पर निर्भर करते हैं सिर्फ विषय ज्ञान पर नहीं।

निबंधात्मक प्रश्नों के उदाहरण निम्नांकित हैं:

- मापन एवं मूल्यांकन के विभिन्न उपकरणों का वर्णन कीजिए।
- भारतीय संस्कृति मूल्य प्रधान संस्कृति है कैसे?
- संप्राप्ति परीक्षण एवं उसके विभिन्न प्रकारों का वर्णन कीजिये।

निबंधात्मक परीक्षणों के गुण

निबंधात्मक परीक्षण आज की वस्तुनिष्ठता की ओर उन्मुख दुनिया में बड़ी आलोचना के शिकार हैं परन्तु उनकी विशेषताओं ने उन्हें संप्राप्ति परीक्षणों में एक महत्वपूर्ण स्थान प्रदान कर रखा है। शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थी संप्राप्ति के मापन के लिए आज भी इनका प्रयोग बहुतायत से किया जाता है। इनकी मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं :

- i. **ज्ञान, रूचि एवं अभिवृत्ति आदि के बहुआयामी मापन में सक्षम**- निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर छात्रों को विस्तार से देने होते हैं इसलिए इनके द्वारा उनके ज्ञान का मापन किया जा सकता है। इनके उत्तर देने में छात्रों को प्रायः अपने विचार प्रकट करने की स्वतंत्रता रहती है इसलिए इनके द्वारा उनकी रूचि एवं अभिवृत्तियों का पता लगाया जा सकता है।
- ii. **ज्ञान के अनुप्रयोग, भाषा-कौशल और अभिव्यक्ति शक्ति का मापन**- इन परीक्षणों में ज्ञान संबंधी प्रश्नों के साथ साथ ज्ञान के अनुप्रयोग संबंधी प्रश्न भी पूछे जाते हैं, जिनके द्वारा छात्रों के ज्ञान के अनुप्रयोग संबंधी क्षमता का मापन किया जाता है। भाषा शैली और अभिव्यक्ति शक्ति

का मापन तो केवल निबंधात्मक प्रश्नों द्वारा ही किया जा सकता है। भाषा की परीक्षा के लिए तो इनका प्रयोग अपरिहार्य होता है।

- iii. **उच्च मानसिक शक्तियों का मापन-** निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर देने में विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार के मानसिक शक्तियों यथा स्मृति, चिंतन आदि का प्रयोग करना होता है। व्याख्यात्मक, विवेचनात्मक, आलोचनात्मक और तुलनात्मक प्रश्नों के उत्तर देने में तो विद्यार्थियों को अपनी विवेक शक्ति का प्रयोग करना होता है। तब इन परीक्षणों द्वारा इन मानसिक शक्तियों का मापन किया ही जा सकता है और किया भी जाता है। ये परीक्षण छात्रों को अपनी मानसिक शक्तियों का विकास के लिए प्रोत्साहित करते हैं।
- iv. **विस्तृत अध्ययन एवं चिन्तन को प्रोत्साहन-** निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर विस्तार से देने होते हैं जो तभी संभव है जब विद्यार्थी ने विस्तार एवं गहराई से अध्ययन किया हो।
- v. **निर्माण में लागत एवं समय कम लगना-** निबंधात्मक परीक्षणों के निर्माण मकाम लगत एवं कम समय लगता है एवं इनके प्रशासन में कोई विशेष कठिनाई नहीं होती। निबंधात्मक परीक्षणों के दोष अथवा कमियां

निबंधात्मक परीक्षण बहुतायत से प्रयोग किये जाने के बावजूद बड़ी आलोचना का शिकार हैं क्योंकि इनमें दोष भी कम नहीं। एक अच्छे परीक्षण में जो गुण वैधता, विश्वसनीयता, वस्तुनिष्ठता और प्रायोगिकता आदि होने चाहिए उन्हें तय कर पाना कठिन है।

- वस्तुनिष्ठता का अभाव
- विश्वसनीयता का अभाव
- विभेदन क्षमता का अभाव
- विद्यार्थी का अंक विभिन्न परीक्षकों के अनुसार परिवर्तित होता है
- निबंधात्मक परीक्षण का मूल्यांकन अत्यंत समय एवं श्रम साध्य

2. **वस्तुनिष्ठ परीक्षण (Objective type test)** - एक वस्तुनिष्ठ परीक्षण का सामान्य अर्थ है वह परीक्षण जिसका मूल्यांकन कोई भी करे हमेशा सामान अंक प्राप्त हों अर्थात् वह परीक्षण जो परीक्षक के विचारों एवं पूर्वाग्रह से मुक्त हो।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के प्रकार (Kinds of objective type question)

वस्तुनिष्ठ परीक्षण मुख्यतः निम्नलिखित दो प्रकार के होते हैं:

- **मानकीकृत परीक्षण (Standardized Test):** वे वस्तुनिष्ठ परीक्षण जिनका निर्माण मानकीकरण की सम्पूर्ण प्रक्रिया से हुआ हो तथा जिन्हें प्रयोग करने से पहले एक समूह पर प्रशासित करके उनका पूर्ण आइटम विश्लेषण किया गया हो मानकीकृत परीक्षण कहलाते हैं। इन

प्रश्नों का निर्माण वैज्ञानिक ढंग से किया जाता है और इनके मानक भी ज्ञात होते हैं। इस प्रकार के परीक्षणों में शामिल प्रश्नों को सर्वप्रथम एक प्रतिनिधि समूह पर प्रशासित करके उत्तर पुस्तिकाओं के अंकन के बाद प्रत्येक प्रश्न का आइटम विश्लेषण करके उनकी विश्वसनीयता, वैधता, कठिनाई स्तर, विवेक सूचकांक आदि ज्ञात किया जाता है फिर आवश्यक संशोधनों के पश्चात पुनः एक बड़े समूह को वही संशोधित परीक्षा दी जाती है और आपेक्षित उत्तर प्राप्त किए जाते हैं और उसके विभिन्न मानकों यथा आयु मानक, कक्षा मानक आदि निर्धारित किये जाते हैं।

- **अध्यापक निर्मित प्रश्न (Teacher Made Test)** वे वस्तुनिष्ठ परीक्षण जिनका निर्माण शिक्षक द्वारा किया गया हो और उन्हें मानकीकृत न किया गया हो, अध्यापक निर्मित परीक्षण कहलाते हैं। ये परीक्षण प्रायः अध्यापक द्वारा विद्यार्थियों के संरचनात्मक मूल्यांकन के दौरान प्रयोग किये जाते हैं। इन प्रश्नों का निर्माण अध्यापक अनौपचारिक ढंग से करता है। उपर्युक्त दोनों प्रकार के प्रश्नों का स्वरूप एवं विषय वस्तु में कोई अन्तर नहीं होता। दोनों प्रकार के प्रश्न सामान्य विषय वस्तु पर आधारित होते हैं किन्तु दोनों के निर्माण की प्रक्रिया में पर्याप्त अन्तर पाया जाता है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के प्रकार

मोटे रूप में वस्तुनिष्ठ परीक्षा के प्रश्नों के निम्नलिखित दो रूप होते हैं -

1. **पुनः स्मरणात्मक प्रश्न (Recall type questions)** - ये प्रश्न वे प्रश्न हैं जिनका उत्तर पुनः स्मरण करके दिया जाता है। इन प्रश्नों में निम्नलिखित दो रूप होते हैं -
 - सरल पुनः स्मरणात्मक प्रश्न (Simple recall type question)
उदहारण: मानकीकरण की प्रक्रिया के द्वारा निर्मित परीक्षणों को क्या कहते हैं?
 - रिक्त स्थान पूरक प्रश्न (Completion type question)
मानकीकरण की प्रक्रिया के द्वारा निर्मित परीक्षणों को कहते हैं।
2. **पुनः पहचानात्मक प्रश्न (Recognition type questions)** - इन प्रश्नों के अनेक उत्तर दिए होते हैं जिनमें से शुद्ध उत्तर परिक्षार्थियों को पहचानना पड़ता है। ये प्रश्न निम्नलिखित प्रकार के होते हैं:
 - एकान्तर प्रत्युत्तर रूपी प्रश्न (Alternative Response type questions)
उदहारण: मानकीकरण की प्रक्रिया के द्वारा निर्मित परीक्षणों को मानकीकृत परीक्षण कहते हैं। सही / गलत
 - बहुनिर्वाचन रूपी प्रश्न (Multiple choice type questions)
उदहारण: मानकीकरण की प्रक्रिया के द्वारा निर्मित परीक्षणों को कहते हैं:
 - a. मानकीकृत परीक्षण
 - b. अमानकीकृत परीक्षण

- c. सामान्य परीक्षण
- d. इनमे से कोई नहीं

- समरूप रूपी प्रश्न (Matching type questions)

उदहारण: मिलान करें

1. शिक्षक निर्मित परीक्षण	a. मानकीकरण की प्रक्रिया के द्वारा निर्मित परीक्षण
2. मानकीकृत परीक्षण	b. विद्यार्थी की संप्राप्ति के लिए निर्मित
3. संप्राप्ति परीक्षण	c. बुद्धि के मापन के लिए निर्मित
4. बुद्धि परीक्षण	d. बिना मानकीकरण की प्रक्रिया के द्वारा निर्मित परीक्षण

इसी प्रकार वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के और भी कई प्रकार हैं इस इकाई में सिर्फ बहुतायत से प्रयुक्त प्रकारों को लिया गया है।

वस्तुनिष्ठ परीक्षणों के दोष

अपने सभी गुणों के बावजूद वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की कमियां बहुत हैं जिसकी वजह से शैक्षिक आकलन में इसका प्रयोग कम किया जाता है जो निम्नांकित हैं:

- वस्तुनिष्ठ परीक्षणों का निर्माण एक कठिन एक खर्चीला कार्य
- विद्यार्थी के समग्र मूल्यांकन के लिए उपयुक्त नहीं
- अनुमान के आधार पर उत्तर लिखे लगाये जाने की सम्भावना
- विद्यार्थी के रचनात्मक पक्षों एवं उसके मजबूत पक्षों की जानकारी नहीं
- निर्माण में विशेषज्ञता आवश्यक

निबंधात्मक एवं वस्तुनिष्ठ परीक्षाओं में अन्तर (Difference between Essay and Objective Type Tests)

जैसा कि आपने देखा निबंधात्मक परीक्षाएं एवं वस्तुनिष्ठ परीक्षाएं दोनों एक दूसरे से विपरित प्रकृति की होती हैं एवं एक के गुण दूसरे के दोष तथा एक के दोष दूसरे के गुण हैं। दोनों प्रकार के परीक्षणों का उद्देश्य यद्यपि छात्रों की शैक्षिक निष्पत्तियों का मापन है किन्तु समान उद्देश्य होने पर भी दोनों में महत्वपूर्ण अन्तर पाए जाते हैं जो निम्नांकित हैं:

मानदंड (Criteria)	निबंधात्मक परीक्षा (Essay Type tests)	वस्तुनिष्ठ परीक्षा (Objective type tests)
विषय वस्तु	इसमें सीमित विषय-वस्तु का मूल्यांकन होता है।	इसमें सम्पूर्ण विषय वस्तु का मूल्यांकन संभव है।
ज्ञान तथा बोध का मापन	ज्ञान एवं बोध दोनों की परीक्षा हो सकती है किन्तु यह बोध की परीक्षा के लिए अधिक उपयुक्त है।	यद्यपि इसमें भी दोनों की परीक्षा संभव है किन्तु बोध की तुलना में यह ज्ञान की परीक्षा के लिए अधिक उपयुक्त है।
प्रश्नों का निर्माण	यह बहुत सरल होता है।	यह तुलनात्मक रूप में कठिन कार्य है।
अनुमान की संभावना	अनुमान से उत्तर देने की संभावना नहीं होती है।	अनुमान की संभावना बहुत अधिक होती है।
उत्तरों का अंकन	अंकन कठिन एवं आत्मनिष्ठ तथा समय साध्य	अंकन सरल, वस्तुनिष्ठ एवं और शीघ्रता से सम्पन्न होती है।

इस प्रकार यदि देखा जाये तो दोनों प्रकार के प्रश्नों के अपने गुण एवं दोष हैं और वस्तुतः निबंधात्मक एवं वस्तुनिष्ठ परीक्षण एक दूसरे के पूरक हैं अतः एक सफल अध्यापक समग्र आकलन के लिए दोनों प्रकार के परीक्षणों का एकीकृत प्रयोग करता है ताकि विद्यार्थी के अधिगम को अधिकतम किया जा सके।

5.6 स्व आकलन

स्व आकलन या स्व मूल्यांकन : बौद 1995 के अनुसार सभी प्रकार के आकलन जिनमें स्व आकलन भी शामिल है उनमें दो मुख्य अवयव हैं: अपेक्षित मानकों के अनुसार निर्णय करना एवं इन मानकों के अनुसार गुणवत्ता का निर्णय करना जब भी स्व मूल्यांकन किया जाता है तब अपने आदर्श रूप में यह विद्यार्थियों को इन दोनों प्रक्रियाओं में शामिल करता है। अन्द्रेड एवं डू (2007) के अनुसार स्व मूल्यांकन संरचनात्मक आकलन की एक प्रक्रिया है जिसमें विद्यार्थी अपने कार्यों की गुणवत्त एवं आपने अधिगम का आकलन करते हैं एवं यह निर्णय करते हैं कि अधिगम उद्देश्यों एवं अपेक्षित मानदंडों की प्राप्ति का स्तर क्या है साथ ही वे अपने द्वारा किया गए कार्यों के मजबूत एवं कमजोर पक्षों की भी पहचान करते हैं ताकि उसमें आगे वांछित परिवर्तन किया जा सके (Self-assessment is a process of formative assessment during which students reflect on and evaluate the quality of their work and their learning, judge the degree to which they reflect explicitly stated goals or

criteria, identify strengths and weaknesses in their work, and revise accordingly (Andred & Du 2007)

स्व आकलन की विशेषताएं (Features of Self-Assessment)

- स्व आकलन व्यक्ति के मूल्यांकन का एक प्राकृतिक तरीका है: स्व आकलन व्यक्ति के मूल्यांकन अथवा आकलन का एक प्राकृतिक तरीका है क्योंकि किसी व्यक्ति ने क्या सीखा अतवा क्या नहीं सीखा अथवा सीखने में उसे क्या कठिनाईयें हैं इसका उत्तर विद्यार्थी से उपयुक्त कोई नहीं जानता यदि विद्यार्थी ईमानदारी से बिना किसी पूर्वाग्रह के अपना मूल्यांकन स्वयं करे तो उस से बेहतर परिणाम कोई मूल्यांकन नहीं दे सकता है
- स्व आकलन व्यक्ति के अधिगम को उन्नत करता है यदि किसी अध्ययनकर्ता को उसके अधिगम का वास्तविक स्तर एवं अपेक्षित स्तर पता हो तो यह व्यक्ति के अधिगम को उन्नत करने में सहायक है क्योंकि व्यक्ति को यह पता है कि उसके कमजोर पक्ष कौन कौन से हैं और उसे कहाँ पर अधिक मेहनत करने की जरूरत है और इसप्रकार उसके पास अवसर होता है कि वह अपने आगे के अधिगम की उपयुक्त योजना बनाये
- स्वमूल्यांकन आगे के अधिगम के लिए प्रेरक है स्व मूल्यांकन के दौरान अपने मजबूत पक्षों की जानकारी विद्यार्थी को आगे के अधिगम के लिए अभिप्रेरित करती है
- स्व मूल्यांकन अधिगम को प्रतिविम्बित करने का एक माध्यम है स्व मूल्यांकन अधिगम को प्रतिविम्बित करने का एक सशक्त माध्यम है स्व मूल्यांकन करते समय व्यक्ति स्व मूल्यांकन रिपोर्ट बहुत सोच समझ कर लिखता है और नकारात्मक बातें भी सकारात्मक तरीके से प्रस्तुत करने का प्रयास करता है
- स्व आकलन विद्यार्थियों की स्वायत्तता एवं जिम्मेदारी की समझ को बढ़ावा देता है
- स्व आकलन विद्यार्थी का आत्म विश्वास बढ़ने में सहायक है
- स्व आकलन अपने आदर्श स्थिति में अधिगम का सटीक आकलन प्रस्तुत करता है
- स्व आकलन व्यक्तिगत भिन्नताओं को ध्यान में रखता है
- स्व मूल्यांकन आकलन की प्रक्रिया में विद्यार्थी को भागीदार बनाकर विद्यार्थी में आकलन की समझ को व्यापक बनाता है
- नैदानिक शिक्षण के लिए उपयुक्त

5.7 सहपाठी आकलन (Peer Assessment) एक सतत मूल्यांकन उपकरण

सामान्य अर्थ में सहपाठी आकलन का तात्पर्य विद्यार्थियों द्वारा अपने सहपाठियों को उनके कार्य की गुणवत्ता के लिए दिया जाने वाला फीड बैक है फैशिकोव (2007) के अनुसार सहपाठी आकलन का तात्पर्य विद्यार्थियों द्वारा अपने सहपाठियों को उनके निष्पादन या उनके उत्पाद पर दिए गए ग्रेड एवं प्रतिपुष्टि से है जो उस उत्पाद अथवा कार्य के सर्वोत्तम होने के मानदंड पर आधारित होता है जिसमें विद्यार्थी शामिल होते हैं।

Peer assessment requires students to provide either feedback or grades (or both) to their peers on a product or a performance, based on the criteria of excellence for that product or event which students may have been involved in determining” (Falchikov, 2007, p.132).

5.7.1 सहपाठी आकलन की विशेषताएं

यदि उपयुक्त तरीके से प्रयोग किया जाये तो सहपाठी आकलन प्रभावी आकलन उपकरण सिद्ध हो सकता है। सहपाठी आकलन की विशेषताएं निम्नांकित हैं:

- सहपाठी आकलन सामूहिक अधिगम को बढ़ावा देता है।
- सहपाठी आकलन अधिगम प्रक्रिया को उन्नत बनता है।
- सहपाठी आकलन विद्यार्थियों के लेखन कौशल में सुधार लाता है।
- सहपाठी आकलन के दौरान आकलन कर्ता रचनात्मक आलोचना के कौशल सीखता है।
- अपने सहपाठियों का आकलन विद्यार्थी में आकलन की गहरी समझ बढ़ाता है।
- सहपाठी आकलन विद्यार्थी के स्व आकलन कौशल को विकसित करता है।
- सहपाठी आकलन विद्यार्थियों के बीच वैचारिक आदान प्रदान को उन्नत बनता है।
- सहपाठी आकलन विद्यार्थी एवं शिक्षक के मध्य शक्ति असंतुलन को काम करता है।
- सहपाठी आकलन विद्यार्थियों की सक्रियता बढ़ाता है।
- यह विद्यार्थियों में सामाजिक गुणों का विकास करता है।
- सहपाठी अधिगम विद्यार्थियों में आजीवन अधिगम को प्रेरित करता है।

5.8 पोर्टफोलियो एवं उसके प्रकार

पोर्टफोलियो शब्द की उत्पत्ति इटालियन शब्द Portafoglio से मानी जाती है। porta का तात्पर्य है ले जाना To Carry और फोगलियो का अर्थ है leaf/ sheet। कुछ विद्वान इसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द Folium से मानते हैं जिसका अर्थ है कार्यालयी दस्तावेज इसप्रकार सामान्य अर्थों में पोर्टफोलियो का अर्थ है विभिन्न दस्तावेजों को ले जानेवाला / रखने वाला सूटकेस। पोर्टफोलियो हालाँकि आज के समय में विद्यार्थियों के संप्राप्ति के आकलन के लिए प्रयोग किये जा रहे हैं परन्तु इनका प्रयोग अत्यंत प्राचीन काल से चित्रकारों, आर्किटेक्ट, कलाकारों आदि के द्वारा अपने कार्य के प्रदर्शन के लिए किया जाता रहा है। सामान्य अर्थों में पोर्टफोलियो, विद्यार्थी के महत्वपूर्ण चुनिन्दा कार्यों का उद्देश्य पूर्ण संग्रह है जिसके साथ प्रदर्शन मानदंडों का भी स्पष्ट उल्लेख होता है।

पालसन, पालसन एवं मेयर पोर्टफोलियो को परिभाषित करते हुए कहते हैं कि “पोर्टफोलियो विद्यार्थी के महत्वपूर्ण चुनिन्दा कार्यों का उद्देश्य पूर्ण संग्रह है जो एक या एक से अधिक क्षेत्रों में विद्यार्थी के प्रयासों, उसकी प्रगति एवं उसकी संप्राप्ति का विवरण प्रदान करता है। इस संकलन में सामग्री संकलन में विद्यार्थी की सहभागिता, चयन के मानदंड, योग्यता निर्धारण के मानदंड एवं विद्यार्थी के आत्म चिंतन के साक्ष्य अवश्य समाहित होने चाहिए”।

Portfolio is a purposeful collection of student's work that exhibits the student's efforts, progress and achievement in one or more areas. The collection must include student participation in selecting contents, the criteria for selection, the criteria for judging merit and evidence of student self-reflection (Paulson, Paulson and Mayer, 1991).

5.8.1 पोर्टफोलियो के प्रकार (Types of Portfolio)

जिनेर एवं रे (Zeichner & Ray, 2001) के अनुसार पोर्टफोलियो के तीन प्रकार हैं:

- **अधिगम पोर्टफोलियो (Learning Portfolio)** अधिगम पोर्टफोलियो का तात्पर्य उस पोर्टफोलियो से है जिसमें विद्यार्थी के अधिगम का समयबद्ध रिकॉर्ड रखा जाता है।
- **प्रमाण पोर्टफोलियो (Credential Portfolio)** प्रमाण पोर्टफोलियो का तात्पर्य उस पोर्टफोलियो से है जिसमें विद्यार्थी की संप्राप्ति से सम्बंधित विभिन्न प्रमाण पत्र रखे जाते हैं।
- **प्रदर्शन पोर्टफोलियो (Showcase Portfolio)** प्रदर्शन पोर्टफोलियो में विद्यार्थी के सर्वोत्तम सम्प्राप्तियों एवं कार्यों का विस्तृत रिकॉर्ड होता है।

स्मिथ एवं तिलेमा (Smith & Tillema, 2003) के अनुसार ई पोर्टफोलियो को निम्नांकित तीन वर्गों में बांटा जा सकता है:

- **डोजियर पोर्टफोलियो (Dossier Portfolio):** डोजियर पोर्टफोलियो (Dossier Portfolio) से तात्पर्य उस पोर्टफोलियो से है जो किसी नौकरी या व्यवसाय चयन अथवा प्रोन्नति हेतु प्रयोग किया जाता है एवं जिसमें पूर्व निर्धारित सूचनाएँ मांगी जाती हैं।
- **प्रशिक्षण पोर्टफोलियो (Training Portfolio):** प्रशिक्षण पोर्टफोलियो (Training Portfolio) में प्रायः प्रशिक्षण एवं अधिगम हेतु पूर्वनिर्धारित सूचनाएँ प्राप्त की जाती हैं।
- **वैचारिक / परावर्तक पोर्टफोलियो (Reflective Portfolio):** वैचारिक / परावर्तक पोर्टफोलियो (Reflective Portfolio) से तात्पर्य उस पोर्टफोलियो से है जो किसी नौकरी या व्यवसाय चयन अथवा प्रोन्नति हेतु प्रयोग किया जाता है परन्तु जिसमें पूर्वनिर्धारित सूचनाएँ नहीं मांगी जाती अपितु इसमें सूचनाओं के चयन के लिए निर्माण कर्ता स्वतंत्र होता है।

5.8.2 पोर्टफोलियो के कार्य (Functions of Portfolio)

- विद्यार्थी के पूर्व ज्ञान की सूचना
- विद्यार्थी की संप्राप्ति का सतत संचयी अभिलेख
- विद्यार्थी के स्व मूल्यांकन में सहायक
- विद्यार्थी के सम्प्रेषण कौशल का विकास
- विद्यार्थी के संप्राप्ति की जानकारी
- विद्यार्थियों के अधिगम एवं उनके माजबूत पक्षों का साक्ष्य
- त्वरित प्रतिपुष्टि
- विद्यार्थी की चिन्तनशीलता का प्रदर्शन

5.8.3 पोर्टफोलियो के लाभ (Benefits of Portfolio)

- विभिन्न मनोवैज्ञानिक लाभ यथा अपनी सम्पत्तियों पर गर्वानुभूति, आत्मविश्वास का विकास
- विद्यार्थियों के सर्वांगीण आकलन में सहायक
- सर्वत्र उपलब्धता
- सुगम्यता, सुगम स्थानान्तरण एवं आदान प्रदान
- अपेक्षाकृत वृहत श्रोताओं को उपलब्ध
- आसन रखरखाव एवं अपडेट करना आसान
- कम लागत, एवं गोपनीयता

- इन्टरनेट के माध्यम से आसन सर्च
- अधिक व्यापक एवं विस्तृत
- तीव्र प्रतिपुष्टि संभव तकनीकी कौशल का प्रदर्शन

पोर्टफोलियो के निर्माण में समस्याएं (Problems in creating a good portfolio)

- पोर्टफोलियो निर्माण के लिए किसी निश्चित नियम अथवा दिशा निर्देश का अभाव
- पोर्टफोलियो निर्माण के लिए उपयुक्त मार्गदर्शन का अभाव
- विद्यार्थी एवं उसके पर्यवेक्षक के लक्ष्यों में भिन्नता
- मूल्यांकन की आत्मनिष्ठता

सफल पोर्टफोलियो के निर्माण हेतु कुछ महत्वपूर्ण बातें

- पोर्टफोलियो बनाने से पहले तय करें कि इसे बनाने के उद्देश्य क्या हैं?
- इस पोर्टफोलियो का श्रोता / मूल्यांकनकर्ता कौन है?
- यह तय करें कि इस ई पोर्टफोलियो में क्या सूचनाएँ देनी हैं?
- किस प्रकार की रचनात्मकता / प्रमाण पत्रों/ कलाओं का उल्लेख करें यह सुनिश्चित करें।
- किस प्रकार के साक्ष्यों का संकलन करें जो स्वीकार्य हो
- किस प्रकार इस पोर्टफोलियो का आकलन किया जाना है?
- इस पोर्टफोलियो का उपयोग किस प्रकार किया जाएगा?

5.3 सारांश

आकलन की प्रक्रिया को विद्यार्थी के सम्पूर्ण आकलन योग्य बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के पारंपरिक एवं नवीन आकलन उपकरणों की आवश्यकता है। आकलन के विभिन्न उपकरणों में असाइनमेंट, परियोजना, परीक्षण, स्व मूल्यांकन, सपथी मूल्यांकन और पोर्टफोलियो आदि हैं। असाइनमेंट का सामान्य अर्थ उस गृहकार्य से है जिसे विद्यार्थी को सतत अध्ययन के दौरान पूरा करना होता है। वस्तुतः असाइनमेंट सतत एवं व्यापक मूल्यांकन अथवा संरचनात्मक मूल्यांकन का एक अभिन्न अंग है। असाइनमेंट के कार्यों में विद्यार्थी को उससे अपेक्षित व्यवहार की समझ विकसित करना, कार्य को कैसे किया जाय इसकी समझ विकसित करना, विषय को सम्पूर्णता में समझने में सहायता प्रदान करना, व्यक्तिगत भिन्नता के अनुसार उनके आकलन में सहायता देना, लचीलापन, योगात्मक आकलन का पूरक, एवं विद्यार्थी में प्रभावी

अध्ययन आदतों एवं ज्ञान के उपयोग की आदत को बढ़ावा देना है। परियोजना विधि विद्यार्थी के समग्र आकलन का एक उपयुक्त उपकरण है जो विद्यार्थी की रचनात्मकता, मौलिकता एवं प्रस्तुतीकरण के आकलन में सहायक है। परियोजना के प्रमुख चरणों में परियोजना का चयन, उसकी रूपरेखा तैयार करना, क्रियान्वयन एवं मूल्यांकन हैं। परीक्षण एक पारंपरिक प्रभावी आकलन उपकरण है जिसमें निबंधात्मक अतवा वस्तुनिष्ठ प्रश्नों को शामिल किया जाता है। दोनों प्रकार के प्रश्नों की अपनी अपनी विशेषताएं एवं कमियां हैं। स्व मूल्यांकन संरचनात्मक आकलन की एक प्रक्रिया है जिसमें विद्यार्थी अपने कार्यों की गुणवत्त एवं आपने अधिगम का आकलन करते हैं एवं यह निर्णय करते हैं कि अधिगम उद्देश्यों एवं अपेक्षित मानदंडों की प्राप्ति का स्तर क्या है साथ ही वे अपने द्वारा किया गए कार्यों के मजबूत एवं कमजोर पक्षों की भी पहचान करते हैं ताकि उसमें आगे वांछित परिवर्तन किया जा सके। स्व आकलन की विशेषताओं में प्रमुख है इसका व्यक्ति के मूल्यांकन का एक प्राकृतिक तरीका होना, व्यक्ति के अधिगम को उन्नत बनाना, अधिगम को प्रतिबिम्बित करने का एक माध्यम, विद्यार्थियों की स्वायत्तता एवं जिम्मेदारी की समझ को बढ़ावा देना, विद्यार्थी का आत्म विश्वास बढ़ने में सहायक है, अधिगम का सटीक आकलन आदि है। सहपाठी आकलन का तात्पर्य विद्यार्थियों द्वारा अपने सहपाठियों को उनके निष्पादन या उनके उत्पाद पर दिए गए ग्रेड एवं प्रतिपुष्टि से है जो उस उत्पाद अथवा कार्य के सर्वोत्तम होने के मानदंड पर आधारित होता है जिसमें विद्यार्थी शामिल होते हैं। सहपाठी आकलन की विशेषताओं में सामूहिक अधिगम को बढ़ावा, अधिगम प्रक्रिया को उन्नत बनाना, विद्यार्थियों के बीच वैचारिक आदान प्रदान बढ़ाना, विद्यार्थियों की सक्रियता बढ़ाना, विद्यार्थी एवं शिक्षक के मध्य शक्ति असंतुलन को कम करना एवं आजीवन अधिगम को प्रेरित करना आदि है। पोर्टफोलियो विद्यार्थी के महत्वपूर्ण चुनिन्दा कार्यों का उद्देश्य पूर्ण संग्रह है जो एक या एक से अधिक क्षेत्रों में विद्यार्थी के प्रयासों, उसकी प्रगति एवं उसकी संप्राप्ति का विवरण प्रदान करता है। इस संकलन में सामग्री संकलन में विद्यार्थी की सहभागिता, चयन के मानदंड, योग्यता निर्धारण के मानदंड एवं विद्यार्थी के आत्म चिंतन के साक्ष्य अवश्य समाहित होने चाहिए।

5.10 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची/ अन्य अध्ययन

1. Gardner, J., (2016) Assessment for Learning: A practical Guide, The northern Ireland Curriculum, retrieved from http://ccea.org.uk/sites/default/files/docs/curriculum/assessment/assessment_for_learning/afl_practical_guide.pdf
2. NCA (2016) Assessment for Learning Leaflet, Retrieved from http://www.ncca.ie/ga/Foilseach%C3%A1n/Foilseach%C3%A1in_Eile/Assessment_for_Learning.pdf
3. NCERT (2005) National Curriculum Framework, 2005, NCERT.

4. NCTE (2009) National Curriculum Framework for Teacher Education, N.C.F. .की रिपोर्ट 2005
5. http://www.hkeaa.edu.hk/DocLibrary/SBA/HKDSE/Eng_DVD/doc/Afl_principles.pdf
6. <https://facultyinnovate.utexas.edu/teaching/check-learning/methods/assignments>

5.11 निबंधात्मक प्रश्न

1. आकलन के विभिन्न उपकरणों का वर्णन करें।
2. उपलब्धि परीक्षण एवं एवं इसके विभिन्न प्रकारों की चर्चा करें।
3. शैक्षिक आकलन के एक उपकरण के रूप में प्रोजेक्ट का वर्णन करें।
4. शैक्षिक आकलन के एक उपकरण के रूप में असाइनमेंट की व्याख्या करें।
5. पोर्टफोलियो, उसके प्रकार एवं कार्यों का वर्णन करें।
6. स्व मूल्यांकन एवं इसकी विशेषताओं का वर्णन करें।
7. सहपाठी मूल्यांकन एवं इसकी विशेषताओं का वर्णन करें।